द्वितीय अध्याय

कथाकार के रूप में अमरकांत का संक्षिप्त परिचय

आधुनिक हिंदी कहानी के निर्माण और विकास में अमरकांत के ऐतिहासिक योगदान को सभी स्वीकार करते हैं। यह भी सच है कि आजादी के बाद आम भारतीय को रचनात्मक इतिहास के माध्यम से जानने, समझने के लिए अमरकांत कहानियों के माध्यम से बढ़िया और उपयुक्त सामग्री मिल गयी है। आप सन 1950 से निरंतर लिख रहे हैं और इस बीच आपने हिंदी साहित्य को कुछ ऐसी कहानियाँ दी हैं जो विश्व की श्रेष्ठतम कहानियों के बीच रखी जा सकती है। 'दोपहर का भोजन' से लेकर 'एक धनी व्यक्ति का बयान' तक को अपनी साहित्यिक यात्रा में अमरकांत ने विकट और जटिल होते जाने वाले भारतीय समाज की विस्मयकारी सच्चाइयों को अत्याधिक संवेदना से रेखांकित किया है। अमरकांत अपनी जमीन से जुड़े ऐसे कहानीकार हैं जो शिल्प की बुनावट और रोमांटिक भावुकता के बल पर कभी खड़ा होने की कोशिश नहीं करतें। साधारण जीवन से उठाये हुये आपके पात्रों के द्वंद और क्रियाकलाप सच्चाइयों का अन्वेषण करते नजर आते हैं। आपकी दर्जनों कहानियाँ अपने समय की मूलधारा को अतिक्रमित करती है, तो कई स्तरोंपर पूर्ण रूप से मांग करती हैं।

अमरकांत फैशन, प्रदर्शन और विभिन्न कहानी आदोंलनों से अलग रहकर निरतंर रचनाशील बने रहें और यही आपकी विशेषता है। आपकी कहानियाँ हिंदी के ठेठ जातीय गद्य संस्कार का पता देती हैं।

2.1 अमरकांत एक अस्तित्ववादी कथाकार

''अमरकांत का पुराना नाम श्री राम वर्मा था। प्रगतिशील लेखक संघ की मीटिंग में दो लड़कें आये थें, एक श्रीराम वर्मा और दूसरे विश्वनाथ भटेले। भटेले बहुत ही बोलते थें। लड़ने मरने को तैयार रहते और रोज एक कहानी लिख देते थें। श्रीराम वर्मा लिखने के साथ गज़ल भी बहुत अच्छी गाते थें और हर मीटिंग या बैठक का एक जरूरी प्रोग्राम आप की गज़ल होती थी। ये गजलें लोगों को बहुत ही प्रिय लगती थी। लेकिन बाद में ये लोग बिखर गयें और कुछ दिनों बाद भटेले को एक पत्र मिला, उस पत्र में लिखा था कि श्रीराम वर्मा यह अब साहित्यिक दृष्टि से अमरकांत हो गये हैं।''[1]

अमरकांत दृष्ट और कमीने लोगों के मनोविज्ञान के मास्टर हैं आपकी तर्कपद्धति, मानसिकता

और व्यवहार को जितनी गहराई से आप जानते हैं उतना कोई भी नहीं। स्थिति और घटना कोई भी हो आप उसके या उससे जुड़े लोगों के इसी टुच्चे पक्ष पर उंगली रखते हैं और आपकी यही चीज सबको अधिक आकर्षक लगती है। निम्नवर्गीय दयनीयता, असफलता और असहायता के बीच उस सबका हिस्सा बनाते हुए आपने कहानियाँ लिखी हैं। आर्थिक रूप से विपन्न, आधी ओढ़ने आधी निचोड़ने वाले बुजुर्ग, छोटे क्लर्क या बेकार नवयुवक अमरकांत के प्रिय पात्र हैं। जैसे 'घुड़सवार' कहानी का पात्र अपनी जिस कमी को हफ्ते भर में जीत सकता था, उसके लिए दुनिया भर में घोड़े दौड़ाता फिरता है। अमकांत के अधिकांश पात्र अपनी समस्याओं, स्थितियों या सपनों में उलझे-फँसे और डूबे हुए लोग हैं लेकिन जब उन्हें दूसरों की निगाह से देखा जाता है तो उनकी सारी छोटी-छोटी कोशिशें हास्यास्पद चेष्टाएँ बनकर रह जाती हैं। कभी-कभी अमरकांत अपने पात्रों से खिलवाड़ करते हुए लगते हैं और उनके बीच होने का लगाव आपको महसूस होता है।

''मनुष्य के छोटेपन के साथ-साथ आप छोटे मनुष्य के कथाकार भी हैं। व्यक्तित्व की लड़ाई से नीचे उतरकर अस्तित्व के लिए लड़ते लोग आपकी कहानियों में हैं। इसप्रकार की कहानी 'जिंदगी और जोंक' का केंद्र समझा जा सकता है। जिंदा रहने की उसकी मजबूरी अस्तित्व को रखने के तथा टूटते जाने पर भी पीछा नहीं छोड़ती। 'जिंदगी और जोंक' इस कहानी में तो खुद जिंदगी को चकमा देकर जिंदा रहने की अभिशप्त नियति है। इस कहानी का पात्र रजुआ, इसे पता भी नहीं कि उसे क्यों जिंदा रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए। अमरकांत के ये सारे पात्र जिंदगी से इसीतरह चिपके हैं। कभी आशा और कभी पराजय में यह पकड़ छूट जाती है लेकिन जल्दी ही फिर वहीं आ चिपकते हैं। 'डिप्टी कलक्टरी' और 'दोपहर का भोजन' इन कहानियों में भी यह दिखाया गया है।''[2]

2.2 अमरकांत प्रेमचंद परंपरा के रचनाकार

अमरकांत की कहानियाँ जिंदगी की तस्वीर पेश करती हैं। प्रेमचंद के बाद हिंदी का कोई दूसरा कहानीकार ऐसा नहीं दिखाई पड़ता जो जिंदगी की वास्तविकता को इतने विश्वसनीय ढंग से पाठकों के

सामने पेश करता है। लेकिन आज तो यह फैशन हो गया है कि जिस कथाकार की प्रशंसा करनी होती है उसे प्रेमचंद के नाम के साथ रख दिया जाता है। अमरकांत की कहानियाँ द्वद्वात्मक दृष्टि से परस्पर विरोधी स्थितियों का समाहार कर पाने की शक्ति से रचित हैं। इसी अर्थ से अमरकांत 'कफन' की परंपरा के रचनाकार हैं। घीसू और माधव का सजातीय पात्र 'जिंदगी और जोंक' का रजुआ है। इस कहानी में जिंदगी रजुआ को चुस रही है और वह जिंदगी को चुस रहा है। रजुआ को सब पीट सकते हैं, गाली दे सकते हैं, अपमानित कर सकते हैं, लेकिन उसे चाहे जहाँ जिस परिस्थिति में डाल दीजिए वह प्रल्हाद की तरह बच निकलेगा। रजुआ जानवर जैसा आचरण करता है उसके रहने के ढंग से तो कभी वह कुत्ता मालूम पड़ता है, कभी गधा तो कभी बैल। लेकिन रजुआ मनुष्य है फिर भी जानवर जैसी जिंदगी बिताता है। इस कहानी में रजुआ की व्यावहारिकता उतनी ही तुच्छ और करूण है जितनी कि 'कफन' कहानी के घीसू और माधव की विश्वसनीयता है। वे शोषित हैं फिर भी वे कामचोर हैं, चालाक हैं। बाप-बेटे भुने हूए आलुओं के लिए एक दूसरे को चकमा देते हैं। कफन को पैसे देने वाले लोगों को भी वे चकमा देते हैं। कफन के लिए चन्दे से इकट्ठा पैसा खान-पान के लिए इस्तेमाल होता है। कहने का मतलब यह है कि 'कफन' कहानी उतनी विश्वसनीय है जितनी अमरकांत 'जिंदगी और जोंक' की वास्तविकता। इसी अर्थ से वे 'कफन' की परंपरा में हैं। यह दृष्टि और शक्ति अमरकांत की अधिकांश कहानियों में सुलभ हैं।

''अमरकांत अचूक और गंभीर व्यंग्य पटुता का स्त्रोत, विचार और दृष्टि के प्रति गहरा विश्वास करते हैं। आपके पात्र जानवर जैसा आचरण करते हैं और फिर मनुष्य के रूप में आ जाते हैं। अमरकांत के निम्नवर्गीय पात्रों की विडंबना अधिक तीव्र है क्योंकि इनकी स्थितियों के द्वंद्व में निम्नवर्ग और उच्चवर्ग की अधिक तीव्रता है। आपकी कहानियों का निर्माण जीवंत वस्तुशीला पर होता है, इसलिए वे पत्थर की तरह ठोस एवं कंक्रीट की तरह शक्ति संपन्न होती हैं। आपकी कहानियाँ वस्तुनिष्ठ हैं वस्तु को चुनने में आप अधिक सर्तक हैं। इसलिए तो आपका रचना संसार महान रचना संसारों जैसा विश्वसनीय है उस विश्वसनीयता का कारण है स्थितियों का अचूक चित्रण जिससे व्यंग्य और मार्मिकता का जन्म होता है। आपकी अभिव्यक्ति

सहज और सरल है एवं जीवन दृष्टि प्रेमचंद परंपरा से मेल खाती है।"[3]

2.3 रूपवाद के विरोधी कथाकार

सन 50 के बाद हिंदी कहानी क्षेत्र में जिस जागरूक नयी पीढ़ी का प्रवेश हुआ, उसमें अमरकांत का नाम लिया जा सकता है। अमरकांत सामाजिक संलग्नता को रचना का खास उद्देश्य मानते हैं और इसीके अनुसार अपनी कहानियों की वस्तु का निर्माण करते हैं। अमरकांत का अपना ढंग है कि वे सामाजिक जीवन की ट्रैजिक विडंबनाओं को भी हल्के विनोदयुक्त आघात से उद्घाटित करते हैं। आपकी कहानियों के विषय और चरित्र अनुभव और वास्तविकता के विस्तार में दूर तक फैले हुए हैं। इस दिशा में आपकी कहानियाँ हिंदी के ठेठ जातीय गद्य संस्कार का पता देती हैं। प्रेमचंद के बाद की मनोवैज्ञानिक या शिल्प केंद्रित कहानियाँ अमरकांत के कथासंसार में अपनी कोई पहचान नहीं छोड़ती हैं। गांव, कस्बा या नगर का वर्गीकृत चरित्र यहाँ कोई अर्थ नहीं रख देता। पूरे लेखन में शायद यह मान्यता अतंर्मुक्त रही है कि छोटी-छोटी सच्चाइयों में ही बोध बना देती है जिसे हम युग का यथार्थ कह देते है।

"अमरकांत की कुछ कहानियों की भूमि और उद्देश्य क्षेत्र को जाँचना यहाँ जरूरी है। 'असमर्थ हिलता हाथ' इस कहानी में मीना का चित्रण किया है। मीना दिलीप नामक युवक से प्यार करती है। इसलिए वह निर्णय लेती है कि अपने पति का चुनाव खुद करेगी। लेकिन इस प्रस्ताव को परिवार के लोग नकारते हैं। माँ ने तो उसके चारों और लक्ष्मण रेखा खींच दी। परिवार के सब लोग मीना के दुश्मन बन जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है मीना की मां बीमार पड़ती है। कहानी के अंत में अमरकांत लिखते हैं, "मीना का चेहरा स्याह हो गया था। उसकी आँखें आंसुओं से भरी थीं।" मां की चारपाई के पास जाकर बोली, "अम्मा माफ करो, मैं वचन देती हूँ कि मैं वही करूँगी जो तुम्हारी इच्छा हो। लक्ष्मी का प्राण निकल रहा था।" अमरकांत इतना ही व्यंग्यात्मक यथार्थ दिखाना चाहते हैं जो स्थिति की तमाम कोशिशों के बावजूद विरोधी रूप में है।"[4]

अमरकांत ने कई कहानियों के चरित्र समाज के निम्न वर्ग से लिये हैं। गुणों के रूप में नहीं तो

दुर्बलताओं के रूप में लिये हैं। इस दृष्टि से अमरकांत की 'मूस' कहानी को देखना चाहिए। दो स्त्रियों याने बतिया और मुनरी के बीच पीसते हुए मूस का चरित्र विद्रूप में बदल गया है। बतिया से टूटा हुआ मूस मुनरी को पाकर अपने पुरुष दंभ का अनुभव करता है। अपनी घमंड़ में वह मुनरी को खो देता है और फिर जब वह पूरी तौर पर निचोड़ कर जिंदगी से विदा लेने को है तब मुनरी उस पर कृपा करती हुई उसे और छोटा बना देती है।

अमरकांत की कहानियों में चरित्रों की बनावट एक सतर्क तरकीब के आधार पर की गयी है। 'महान चेहरा' इस कहानी में एक चरित्र है जो चेहरे से विचार की ओर जाने वाले इस चरित्र की स्वाभाविक परिणति लखपति बनने की दिशा में हुई है। तो 'विजेता' इस कहानी में बदले की भावना का ट्रैजिक अंत है। 'दुर्घटना' यह कहानी एक शहरी व्यक्ति के दुर्बल मानसिकता की कहानी है। 'मौत का नगर' यह कहानी सांप्रदायिक दंगों के संदर्भ में लिखी कहानी है। इस कहानी में ऐसे अनेक संकेत हैं जो वातावरण को भयावह व्यंग्य से जोड़ते हैं। सीधे सादे विवरणों से कहानी में एक प्रकार की प्रगाढ़ता लाने की कोशिश अमरकांत की कहानियों में देखने को मिलती है। पहले 'डिप्टी कलक्टरी', 'जिंदगी और जोंक' बाद की 'दोपहर का भोजन' इस दृष्टि से आपकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। आपकी और भी रोचक कहानियाँ देखने को मिलती हैं, जैसे 'सप्ताहांत', 'काली छाया'। सप्ताहांत इस कहानी में एक ऐसे व्यक्ति स्वभाव की दिलचस्प परंतु व्यंग्यात्मक कहानी हैं जो छोटी-छोटी जरूरतों के तर्क से संपर्क में आये हर व्यक्ति को धोखा देते चला जाता है और अंत में लाटरी के प्रलोभन में उन्हीं से ऐसा बेवकूफ बन जाता है जो उसकी शक्ति को कई-कई दिनों के लिए खत्म कर जाता है। 'काली छाया' इस कहानी में व्यंग्यात्मक पहलू यह है कि जो अज्ञात युवक रात में चोर समझा जाकर अपमानित होता है और पिटता भी है। वही दिन के उजाले में लोगों की सहज सहानुभूति का पात्र हो जाता है। इसप्रकार कथ्य की प्रधानता अमरकांत की कहानियों में देखने को मिलती है। रूपवाद के विरोध में जाकर भी अमरकांत की कहानियाँ किसी हद तक इस रहस्य को खोल देती हैं।

2.4 आलोचनात्मक यथार्थवादी लेखक

"अमरकांत आलोचनात्मक यथार्थवादी लेखक हैं इस तर्क से कि रोचक सरलता का निर्वाह करते हुए भी समस्याओं के विश्लेषण में उनकी चेष्टा बनी रहती है। अमरकांत ने कथानक, कला की रोचकता को नयी तटस्थता से समन्वित किया है। अमरकांत कहानियों में जिस एक मूलभाव को बार-बार प्रगट करते हैं उसे हम जीने के लिए संघर्ष कहेंगे। पर सभी कहानियाँ महत्त्वपूर्ण हैं ऐसा कोई भ्रम अमरकांत के यहाँ नहीं है। कई कहानियाँ मानसिक तैयारी के अधूरेपन का अहसास कराती हैं। जैसे 'फ्लास के फूल' यह बूढ़ो के कृत्रिम रोमांस की कहानी है। कहानी उनके स्वभाव को पूरी तरह प्रगट करती है जो जिंदगी से रस लेने के बहाने अपने को ही धोखा दे रहे हो।"[5]

अमरकांत की कहानियों का समय वर्तमान है। ये कहानियाँ वर्तमान में रहने के लिए संघर्ष करती हैं और महत्त्वकांक्षा के सहारे फेंकें जाने से इन्कार करती हैं। बौध्दिकता और भावुकता, प्रतिबध्दता और रूपात्मकता के अतिवाद से अलग अमरकांत वर्णनात्मकता और मुखरता के भेद से परिचित हैं। यथार्थता और व्यंग्यात्मकता दोनों स्तरों पर आप रचनाकार का नैतिक दायित्व पहचानते हैं।

2.5 एक पक्षधर लेखक की भूमिका

"अमरकांत ने जब हिंदी कहानी के क्षेत्र में प्रवेश किया तो वह कहानी का एक नया उन्मेष का काल था। इ.सन् 56 के कहानी विशेषांक में अमरकांत की 'डिप्टी कलक्टरी' कहानी पुरस्कृत होकर छपी थी। लेकिन आप उससे भी दो-तीन वर्ष पहले से कहानियां लिख रहे थें और 'दोपहर का भोजन' आपकी आरंभिक कहानी थी। जो 'डिप्टी कलक्टरी' से प्रायः दो वर्ष पूर्व प्रकाशित, हो चुकी थी। लेकिन अमरकांत का नाम मुख्य रूप से 'डिप्टी कलक्टरी' को पुरस्कार मिलने के बाद ही लोगों के सामने आ गया। आपने अपनी कहानियों में जिंदगी और आस पास की सारी विसंगतियों को अंर्तविरोधों के साथ चित्रित किया गया है। जिन दूसरे समकालीन कहानीकारों ने अधिकांश में स्त्री-पुरूष संबंधों को लेकर कहानियां लिखी हैं। पर

अमरकांत के यहाँ स्त्री-पुरुष संबंधों की कहानियों का अभाव है। आपकी कहानियों में घटना और पात्र बहुत मामुली हो सकते हैं लेकिन इनमें से किसी एक के माध्यम से आप परिवेश और वर्ग की प्रतिक्रियाओं को बड़ी खूबी के साथ अंकित करते हैं और इसतरह किसी एक व्यक्ति को लेकर लिखी गयी कहानी निम्नवर्ग की सोच और मानसिकता की कहानी बन जाती है।''[6]

''अमरकांत की 'गले की जंजीर' बड़ी मामूली सी घटना को लेकर लिखी कहानी है, जिसमें कोई गहरा अर्थ नहीं है लेकिन कहानी में एक आदमी की जंजीर रात में सोते वक्त उसके गले से गायब हो जाती है और दिक्कत यह है कि वह भी उसकी अपनी न होकर उसके एक मित्र की थी। जिसे उसने अपने निम्नवर्गीय अभावों के सिलसिले के बीच शौक में आकर गले में डाल लिया था। इस जंजीर की चोरी की सूचना के आधार पर ही कहानी विकसित होती है। जो भी सुनता है वह उसे उस बात के लिये दोषी ठहराता है कि जंजीर यहाँ न होकर वहाँ क्यों थी ? और लोगों से जहाँ-जहाँ सुरक्षित रह सकने की बात सुनता है, हर अगले आदमी को उसी जगह उसके होने की बात बताता है लेकिन लोग हैं कि उसे चैन नहीं लेने देतें। अंत में एक ठाकुर साहब उसके भोलेपन अर्थात् मूर्खता पर तरस खाकर उसकी नासमझी पर हँसते हैं और बड़े राज के स्वर में कहते हैं कि उसकी सबसे सुरक्षित जगह उसका गला ही था अब वह यह कहने के और बताने के स्थिति में नहीं था क्योंकि वहाँ से तो उसकी चोरी हुई थी।''[7] इस कहानी में अमरकांत बड़े सहज रूप में इस तथ्य को अंकित करने की कोशिश करते हैं कि जिसकी चीज खो जाती है अंत में वही बेवकूफ बनता है। इसतरह एक बेहद मामूली घटना के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय सोच और मानसिकता को अंकित कर दिया है।

''इसी तरह 'नौकर' कहानी में वकील साहब का घरेलू नौकर जंतू का वर्णन किया है। लेखक का वास्तविक उद्देश्य नौकर को लेकर मध्यवर्गीय ओछेपन और टुच्ची मनोवृत्ति को रेखांकित करना है। इस कहानी में नौकर को लेकर मालिक की मानसिकता प्रस्तुत होती है। नौकर के माध्यम से वकील परिवार की और प्रकारांतर से पूरे मध्यवर्गीय समाज की पूरी दिनचर्या का अंकन इस कहानी में बड़ी सहजता और सादगी

के साथ हुआ है। अपने को बड़ा और नौकर नामक जीव को छोटी जाति का समझने की प्रवृत्ति - जिसे बीमारी में दवा-दारू की भी जरूरत नहीं होती। यही इस कहानी में दर्शाया है।"[8]

अमरकांत अपनी कहानियों में सामाजिक प्रतिक्रियाओं के अंकन की अपनी यह पध्दती भी बरकरार रखते हैं। "आपकी 'फर्क' नामक कहानी में चौदह-पद्रंह बरस के एक मरियल से लड़के को मारपीट करके लोग उसे थाने लाते हैं और छोटी-मोटी चोरी की कहानी को झूठ मानकर उससे सच बताने की कोशिश करते हैं। लेकिन तभी चार सिपाहियों से घिरा, बन्दुकों के बीच बिठाया गया, छः फुटा डाकू इक्के से उतरता है तब उस मरियल से लड़के को लोग भूलकर उसकी प्रशंसा और सराहना में लीन हो जाते हैं और लोग यह कहते हैं कि डाकू होने के बावजूद भी वह गरीबों का मददगार है और भले घर की औरतों की ओर तो वह आँख उठाकर देखता भी नहीं। स्थिति की विडंबना यह है कि एक डकैती में पांच कत्ल करके बीस हजार की सम्पति लुटने वाला डाकू समाज की नजरों में सराहना और साधुवाद का पात्र बन जाता है। जबकि भूख की असह्य यातना से लाचार वह लड़का मौका मिलने पर किसी घर में घुस कर चार पराठे खाता है, एक गिलास दूध पीता है और एकाध कपड़ा या छोटा-मोटा बर्तन उठा ले जाता है जिसे बेचकर एक जून की रोटी खा सके वहीं लोगों की नजरो में अपराधी हो जाता है। इस लड़के के माध्यम से समाज में होनेवाली प्रतिक्रियाओं का अंकन 'फर्क' कहानी में किया है।"[9]

अमरकांत की कहानियों का रचना संसार अपने आस पास जीता-जागता परिवेश है और जीवन का वैविध्य, उसकी ताजगी और अनगढ़ता ही आपकी कहानियों का सबसे बड़ा आकर्षण है। आपकी कहानियों को पढ़कर पिछले दो दशकों के देश की स्थिति का जायजा आसानी से मिल सकता है। जीवन के इस खुले और सीधे साक्षात्कार का परिणाम यह है कि आप समाज में अच्छाई और बुराई के संघर्ष को इतने साफ तौर से पहचान और रेखांकित कर सके हैं।

2.6 मानवीय संवेदनाओं के कथाकार

अमरकांत मानवीय संवेदनाओं के कथाकार हैं और आपकी "प्रत्येक कहानी में यह गुण अपनी

परिपक्वता के साथ देखा जा सकता है। संवेदना का एक विचित्र रूप आपकी 'मूस' नामक कहानी में देखने को मिलता है। प्रकृति की क्रूर क्रीड़ा में फंसे हुए मनुष्य की निष्कृति की यह कथा बहुत कुछ कहती है और मनुष्य को अपनी नूतन मूल्यवता के साथ जीवित रहने के लिए प्रेरित करती है। आप जीवन के प्रति विश्वास रखनेवाले प्रगति एवं यथार्थ के कलाकार हैं। आपने अपने अनुभवोंद्वारा अपनी रचनाओं की सृष्टि की है और रचना के प्रति ईमानदार रहने के कारण आपकी अभिव्यक्ति मार्मिक हो गयी है। आप यदि उस वर्ग के पोषक हैं जो दलित एवं कल्पित है।''[10]

अमरकांत की प्रमुख विशेषता। एक लेखक के रूप में आपकी गरिमापूर्ण सहजता है। आपका रचनाओं का संसार आपकी अपनी अनुभूति जनित कल्पना का संसार है जो पार्थिव होते हुए भी एक आदर्श संसार है। यह लेखक की बहुत बड़ी सफलता है जो जीवन के गंभीर अध्ययन एवं आस्वादन से उसकी साधना और तपस्या से प्राप्त होती है। आप प्रतिभा के कई आयाम हैं, कई स्तर भी हैं। प्रकृति के लिए आप सहज आकर्षित होते है और इसीकारण आप अपनी संप्रेषणीयता में सफल सिध्द हुए हैं।

''शरत बाबू ने कहा है कि, 'लेखाय उछ्वास यत बाद दिते पारेन ततई भालो।' इस बात को अमरकांत ने अपने लेखन का मूलमंत्र मान लिया है। आपकी रचनाओं में एक तलवार की सी धार है जो जीवन की निरर्थकता को काटती चली जाती है। आपकी लेखनी पुकार-पुकार कर कह रही है, 'जीवन एक दलदल है उससे मुक्ति नहीं मिलेगी।' इतनी तीव्र करूणा कभी-कभी संवेदना को भोथरा बना देती है यह अमरकांत की कहानियों की नियति है। आप संकोची, संकुचित और शकी व्यक्तित्व के स्वामी हैं इसीलिए तो आपकी संवेदना निम्नमध्यवर्ग की संवेदना है।''[11]

आपकी कहानियाँ एक विशेष अर्थ में भारतीय हैं। वे सामान्य भारतीय व्यक्ति के संस्कारों, भावनाओं और भावुकता को भी व्यक्त करती हैं तथा उनके साथ जो पिछड़ापन, अंधविश्वास और पाखण्ड जुड़ा हुआ है उन्हें भी विडंबनात्मक ढंग से उजागर करती हैं। आप भारतीय निम्न-मध्यवर्गीय मनुष्य की भावनाओं को जितना समझते और आदर करते है उतना ही अंतविरोधों को भी तीखे व्यंग्यात्मक ढंग से

व्यक्त करते हैं। इससे यह पता चलता है कि अमरकांत अपने समय के अन्य कथाकारों की तुलना में अपनी सारी संवेदना भावाकुलता उत्पन्न करने वाले कथाकार हैं। आपकी कहानियाँ नयी हिंदी समीक्षा के लिए एक नया मानदंड बनाने की मांग करती हैं जैसी मांग कभी मुक्तिबोध की कविताओं ने की थी।

2.7 प्रगतिशील चिंतन के कथाकार

''इस दशक के प्रगतिशील कथाकारों में अमरकांत का नाम विशेष महत्त्वपूर्ण है। सीधे-साधे सहज ढंग से अपनी बात कहना आपकी विशेषता है। आपके प्रकाशित कहानी संग्रह 'जिंदगी और जोंक', 'देश के लोग', 'मौत का नगर' हैं। आपकी प्रकाशित कहानियाँ 'दोपहर का भोजन', 'डिप्टी कलक्टरी', 'छिपकली', 'हत्यारे', 'मौत का नगर', 'जिंदगी और जोंक', 'मूस' आदि हैं। इन कहानियों में आज के मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ के बहु विचित्र पक्षों का कुशलता एवं मार्मिकता के साथ उद्घाटन किया गया है। इस पूंजीवादी समाज में जीने वाले मध्य वर्ग के लोगों की लाचारियों, पीड़ाओं, घुटन एवं घिनौनी जिंदगी की विवशताओं का अमरकांत ने ऐसी मार्मिक संवेदनशीलता के साथ उद्घाटन किया है कि प्रत्येक कहानी एक स्थायी प्रभाव मन पर छोड़ जाती है। आपकी कहानी प्रयासहीन शिल्प का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करती है। इन कहानियों की भाषा उतनी ही सादी है जितनी की ये कहानियां।''[12]

मानव प्रतिमा को उसके परिवेश की समस्य विसंगतियों के साथ चित्रित करने में अमरकांत का नाम सबसे महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक जीवन की समस्त विसंगतियों का चित्रण आपकी कहानियों में मिलता है। आपकी कहानियों में निम्नमध्यवर्ग एवं मध्यवर्ग की विभिन्न समस्याओं का सहज चित्रण है। आपकी 'दोपहर का भोजन' कहानी में आर्थिक विपन्नता में टुटते परिवार को बचाने का प्रयास है तो 'हत्यारे' में सामाजिक विश्रृंखलता से उत्पन्न त्रास का कलात्मक ढंग से वर्णन है। आपकी 'छिपकली' कहानी में बाबू अभावग्रस्त जीवन से असंतुष्ट होते हुए भी ऊपर उठने का स्वप्न देखता है। वह अपनी स्थिति से बहुत नाखुश है इसलिए व्यापार करके अमीर बनने का स्वप्न देखता है यद्यपि असफलता ही उसके हाथ लगती है। इस कहानी में अभावग्रस्त बाबू की प्रतिमा का वर्णन किया है।

2.8 कस्बाई मनोवृत्ति के कथाकार

''अमरकांत प्रमुख रूप से कस्बाई मनोवृत्ति के कथाकार हैं। आप गांवों और कस्बों की जिंदगी का एक अंग हैं। नयी स्थितियों, घटनाओं, क्रियाओं से उस जिंदगी में आनेवाले बदलावों का असर आपकी खुद की जिंदगी पर भी पड़ रहा है। दूसरे, उन गांवों, कस्बों के साथ-साथ पूरे भारत वर्ष की जिंदगी को लेकर आपके कुछ स्वप्न थें, कुछ अपेक्षाएँ थीं, तीसरे उन गांवों, कस्बों की जिंदगी से कटकर नये अभिजात वर्ग के अनुसार विशिष्ट बनाने वाले व्यवसाय को न चुनकर आपने ऐसा व्यवसाय अपनाया जो आपको उस जिंदगी के पात्रों, वस्तुओं के साथ संवेदनात्मक स्तर पर जोड़ देगा। आपकी 'जिंदगी और जोंक' कहानी में कस्बाई मनोवृत्ति को उभारने के लिए ही कस्बाई वातावरण की रचना की गयी है। जिस मुहल्ले की यह कहानी है उसमें निम्नवर्गीय लोग रहते हैं जो नौकर नहीं रख सकतें। आपकी दूसरी कहानी 'दोपहर का भोजन' यह कहानी भी मध्यवित्त परिवार की कस्बाई मनोवृत्ति की कहानी है। जहाँ माँ परिवार को टूटने से बचाने के लिए प्रति पल टूटती रहती है। एक दूसरे से सारे परिवार को जोड़े रखना तथा झूठ बोलकर एक दूसरे में दिलचस्पी बनाए रखना और स्वयं अंत में आधी रोटी खाकर ही अधभूखे रहकर बच्चों के लिए आंसू बहाना आदि उसकी कस्बाई मनोवृत्ति का ही चित्रण देखने को मिलता है।''[13]

लगभग इन्हीं परिस्थितियों में अमरकांत ने अपनी पहली कहानी 'कम्युनिष्ट' लिखी थी। यह एक तस्वीर है जो कहीं भीतर ही स्थिर होकर जड़ हो गयी है। हर गाँव और कस्बे का अपना एक गांधी था। एक उग्र राष्ट्रीय विचारधारा भीतर ही भीतर पनप रही थी, ठाकूरों का यह राजनीतिक बँटवारा गाँव की बनावट के अनुसार ही था। ग्रामीण जीवन के बदलते हुए रूपों के साथ कस्बों का और शहरों का भाग्य बदलता चला गया है।

अमरकांत विशेषतया कस्बाई मध्यवर्ग्रीय परिवार की विविध समस्याओं, आकांक्षाओं, संबंधो और क्रियाकलापों का जीता-जागता विधान करते आ रहे हैं। इन सबके बीच निम्नवर्ग की दुनिया भी आती रहती है और आप बड़े सहज भाव से इस सारे सामाजिक यथार्थ के केंद्र में वर्तमान, आर्थिक विषमता को

रेखांकित करते रहते हैं।

2.9 टूटते हुए मध्य वर्ग के कथाकार

अमरकांत टूटते हुए मध्यवर्ग के कथाकार हैं, आप कठोर व्यंग्य से शोषक वर्ग पर गहरी चोट करते हैं। आप अपनी कहानियों की कथावस्तु साधारण जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं और स्थितियों से चुनते हैं। आप कहानी के पात्रों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझते हैं, उन्हीं के साथ जीते मरते हैं। अमरकांत अपनी अधिकांश कहानियों में नवीन आर्थिक परिस्थितियों से संघर्षशील मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं, विशेषताओं, पीड़ाओं, प्रवंचनाओं और जीवन की भूख का मर्मभेदी चित्रण करते हैं। आज की नई कहानी में नयापन भरनेवालों में अमरकांत अग्रणी हैं। कहानी के माध्यम से अमरकांत समाज के मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक कठिनाइयों और बेरोजगारी का चित्रण करते आ रहे हैं।

'दोपहर का भोजन' अमरकांत की एक बहुचर्चित कहानी है। प्रस्तुत कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार से जुड़ी है। कहानी के पात्र मध्यवर्गीय, गरीब और बेरोजगार हैं। उनको दोपहर का भोजन भी पूरी तरह से नहीं मिलता। कहानी का प्रारंभ और अंत दोपहर के भोजन से ही हो जाता है। एक परिवार के पांच सदस्यों में ही कहानी चलती रहती है। अमरकांत ने इस कहानी में वर्तमान स्थिति का चित्रण बड़े ही रोचक ढंग से किया है।

प्रख्यात समीक्षक डॉ. नामवरसिंह कहते हैं "अमरकांत ने अपनी कहानियाँ मध्यवर्गीय परिवारों से उठाई हैं और इस तरह हमारी आँखों पर से जिंदगी के न जाने कितने पर्दे उठ दिए हैं। इस क्षेत्र में अमरकांत की कहानियाँ किसी भी नये लेखक के लिए चुनौती हैं।"[14]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अमरकांत आधुनिक काल के सुप्रसिध्द कथाकार हैं। आपने अपने साहित्य में इतिहास, वर्तमान को जोड़ने का प्रयास तो किया ही है साथ ही नयी और पुरानी पीढ़ी के

संघर्ष को दिखाते हुए युवाओं को उससे प्रेरणा दिलाने का कार्य किया है। एक संवेदनशील साहित्यकार की तरह आपने समाज को अपने नजरिये से देखकर उसे अपने अंदाज से प्रस्तुत किया है।

कहानियों की दृष्टि से देखा जाये तो अमरकांत ने 90 के दरमियान कहानियाँ लिखी हैं। आपकी कहानियाँ जीवन के अधिक निकट दिखाई देती हैं परंतु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपकी कहानियों से सामान्य मनुष्य और उसका जीवन साफ झलकता है। आपने कथा साहित्य में समाज के तीनों वर्गों-उच्चवर्ग, मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का खुलकर चित्रण किया है।

अमरकांत उन कहानीकारों में से हैं जिन्होने कहानी को जिंदगी के लिए जरूरी चीज का दर्जा दिया है और स्पष्ट शब्दों में, वे आपके निकट जीवन संघर्ष का हथियार रही हैं। अमरकांत का एक अपना ढंग है और वह काफी अच्छा रोचक और प्रभावशाली है। आपकी सादगी साधारणता से भिन्न है। आप प्रभाव डालने की चेष्टा कम ही करते हैं और यही आपकी सबसे बड़ी विजय है। आप पर कोई आतंक देर तक हावी नहीं हो सकता क्योंकि आप अपने कंधे झटक कर अनचाहे बोझ फेंक देने में समर्थ हैं। आपके अंदर अपनी आतंरिक, मौलिक रचनात्मकता का बल एवं विश्वास है इसीलिए आप एक ऐसे कथाकार है जिन्होने कभी नकल में कहानियाँ नहीं लिखीं आपकी कहानियों में पक्षधरता और प्रबुध्दता साथ-साथ चलती है।

संदर्भ संकेत

1. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल, अमरकांत, पृ. 188
2. वही, पृ. 193
3. कुछ कहानियाँ : कुछ विचार, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ. 15-16
4. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल, अमरकांत, पृ. 166
5. वही, पृ. 169
6. वही, पृ. 152
7. वही, पृ. 154-155
8. अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ (भाग - 1), अमरकांत, पृ. 33
9. वही (भाग - 2), पृ. 72-75
10. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल, अमरकांत, पृ. 260
11. वही, पृ. 271
12. हिंदी कहानी और रचना सिध्दांत, पृ. 190
13. वही, पृ. 191
14. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल, अमरकांत, पृ. 224